उनका डर

असग़र वजाहत

उनका डर

गाड़ी की रफ्तार साठ के करीब थी। सीधे, बिल्कुल सीधे हाई-वे पर वह पानी की तरह बही जा रही थी। इससे पहले इस तरह इतना लंबा सफर मैंने नहीं किया था। हां, इन इंटरस्टेट हाइवेज के बारे में सुना जरूर था।

वे चारों हिंदुस्तानी थे या जैसे कि वे कहते थे, हैदराबादी थे। मेरी उनसे खास जान-पहचान नहीं है फिर भी मैं उनके साथ डेट्रायट से शिकागो जा रहा था। हुआ यह कि अलीगढ़ के मेरे दोस्त अंजुम ने मुझे फोन करके बताया कि उनके भाई शिकागो आ रहे हैं और मैं चाहूं तो उनके साथ आ सकता हूं और यह कि वे मुझसे पैसा नहीं लेंगे। अंजुम मेरे साथ अलीगढ़ में थे और हम दोनों ने साथ मिलकर उर्दू की खिदमत करने के कई प्लान बनाए थे। एक प्लान के तहत तो कई सौ रुपया चंदा भी जमा हो गया था, खजांची होने की वजह से अंजुम के पास जमा था। फिर इम्तहान खत्म हो गए। अजुंम हैदराबाद और वहां से अमरीका आ गए। उर्दू बेचारी वहीं अलीगढ़ में रह गई।

ये लोग यानी अंजुम के भाई मसरूर साहब और उनके दोस्त मुझे देखने में कुछ अजीब लोग लगे थे। असद साहब ने काली शेरवानी और अलीगढ़कट पाजामा पहन रखा था। उनकी दाढ़ी खास अलीगढ़ के जमाअते-इस्लामी वालों की दाढ़ी की टक्कर की थी। यह सब हिंदुस्तान में मैंने हमेशा देखा और भुगता था, लेकिन यह उम्मीद नहीं थी कि किसी ऐसे आदमी से अमरीका में भी मुलकात हो जाएगी। तीसरे साहब डॉक्टर ताहिर थे और चौथे मोटे और कुछ बेवकूफ से लगने वाले साहब का नाम अहमद था। बाद में पता चला कि इनमें से तीन लोग यानी मसरूर साहब, असद और डॉ. ताहिर काफी पढ़े-लिखे हैं। मसरूर साहब ने अमरीका ही की किसी यूनीवर्सिटी से कैमिस्ट्री में पी-एच.डी. की थी, डॉ. ताहिर भी वेन यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के प्रोफेसर थे, असद साहब के पास इंजीनियरिंग की कोई बड़ी डिग्री थी। हां, चौथे साहब के बारे में ठीक से नहीं मालूम। लेकिन ये भी बी.ए. पास जरूर रहे होंगे। सफर शुरू हुआ तो डॉ. ताहिर गाड़ी चला रहे थे। उनको शहर से निकलकर आई नाईंटी फोर तलाश करने में कुछ मुश्किल हो रही थी। मसरूर साहब आगे की सीट पर मिशीगन स्टेट का नक्शा खोले शहर से आई नाईंटी फोर तक पहुंचने का रास्ता बता रहे थे। डॉ. ताहिर ने किसी गलत एक्जिट पर गाड़ी मोड़ ली और कुछ दूर जाने के बाद पता चला कि हम लोग एक-दूसरे हाई-वे से फिर वापस शहर जा रहे हैं।

''लीजिए, आ गए न गलत हाई-वे पर। अब देखिए कब एक्जिट मिलता है,'' मसरूर साहब बोले।

''सात-आठ मील तो चलना ही पड़ेगा। ये कमबख्त बड़ी खराबी है हाईवेज की।'' कुछ देर की भाग-दौड़ के बाद गाड़ी नाईंटी फोर पर आ गई, अब बस सीधा रास्ता था, नाक की सीध में।

''हां, तो मीटिंग कैसी रही अहमद साहब?'' मसरूर साहब ने नक्शा बंद कर दिया।

''और तो सब बातें तय हो गईं, लेकिन टोरंटो की ब्रांच से बात करने वाली बात रह गई,'' अहमद साहब ने जवाब दिया।